प्राक्कथन

आधुनिक हिंदी साहित्य जगत में उपन्यास की लोक प्रियता बहुत बढ गयी है। साहित्य की अन्य विधाओं की अपेक्षा इसके सर्वाधिक पाठक हैं। उपन्यास का वास्तविक संबंध युगीन जीवन से होता है। उपन्यास में मानवीय संवेदना की हार्दिक अभिव्यक्ति होती है। उपन्यास जीवन के यथार्थ का प्रस्तुती करण करके, मनुष्य के उसके यथार्थ परिवेश में देखने तद्नुसार चित्रित करने का सशक्त माध्यम है।

मैंने बी. ए., एम. ए. की पढाई के समय प्रेमचंद, जैनेंद्र, यशपाल, मन्नू भंडारी, शशिप्रभा शास्त्री के कई उपन्यास पढे। उस समय मुझे नारी उपन्यासकारों की औपन्यासिक रचनाओं ने बहुत प्रभावित किया। शशिप्रभा शास्त्री के 'कर्करेखा' उपन्यास पढने के बाद मैं उनसे प्रभावित हो गई। उस समय मैने उनके अन्य औपन्यासिक रचनाएँ पढने का निश्चय किया और 'परछाईयों के पीछे','उम्र एक गलियारे की' उपन्यासों को पढा। तब मेरी समझ में आया कि उनके उपन्यासों का मुख्य विषय रहा है साठोत्तरी पारिवारिक जीवन। अनुभवों की सच्चाई, संवेदनशीलता आपके उपन्यासों की विशेषता है। इन्ही विशेषताओं से युक्त आपके उपन्यासों में चित्रित पारिवारिक जीवन पर शोध कार्य करने की इच्छा मेरे मन में निर्माण हो गई थी। मेरी सुप्त इच्छा उस समय पुन: प्रकट हो गई जब मैंने निर्माण हो गई। मेरी सुप्त इच्छा उस समय पुन: प्रकट हो गई जब मैंने एम् फिल के लिए प्रवेश लिया। मैंने मेरी इच्छा मेरे मार्गदर्शक गुरुवर्य डॉ. र. ग. देसाईजी से बतायी, उन्होने तुरंत इसकी अनुमति दी।

अनुसंधान के प्रारंभ में मेरे सामने निम्नंकित प्रश्न खडे थे -

(1) परिवार का अर्थ परिभाषा एवं उसका प्रयोजन क्या होगा ?

(2) परिवार का सामाजिक महत्त्व, उसके कार्य एवं विशेषताएँ क्या हैं?

(3) दाम्पत्य जीवन को सुखी एवं सुरक्षित बनाने के लिए कौनसे गुण आवश्यक होते हैं? शशिप्रभा शास्त्री ने इसका अंकन कैसे किया है ?

(4) सफल - असफल दाम्पत्य जीवन के कारण कौनसे हैं ? शशिप्रभा शास्त्री के उपन्यासों में किन-किन कारणों का उल्लेख है?

(5) पारिवारिक जीवन सम्बन्धों में परिवर्तन एवं विघटन किस रूप में हो रहा है? शशिप्रभा शास्त्री के औपन्यासिक कृतियों में उसका चित्रण कैसे हुआ है?

(6) पारिवारिक जीवन में उपस्थित परिवर्तनों को उपन्यासकार शशिप्रभा शास्त्रीजी ने कैसे प्रस्तुत किया है?

(7) शशिप्रभा शास्त्री ने किन-किन पारिवारिक समस्याओं को प्रकाशित किया है?

(8) शशिप्रभा शास्त्री द्वारा चित्रित पारिवारिक जीवन की विशेषताएँ क्या हैं?

(9) बदलते परिवेश में परिवार में कौनसे परिवर्तन हो गए हैं?

इन प्रश्नों के उत्तर अध्ययन के पश्चात प्राप्त निष्कर्षों के रूप में उपसंहार में दिए हैं। अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से मैने अपने लघुशोध प्रबंध को निम्नंकित पाँच अध्यायों में विभाजित किया है-

प्रथम अध्याय : -

'शशिप्रभा शास्त्री' का व्यक्तित्व एवं कृतित्व :- किसी भी साहित्यिक कलाकृति के सम्यक अनुशीलन के लिए रचनाकार के जीवन एवं साहित्य का सामान्य परिचय आवश्यक होता है। प्रस्तुत अध्याय में 'शशिप्रभा शास्त्री' के जन्म और व्यक्तित्व का विवेचन किया है। प्रस्तुत अध्याय में व्यक्तित्व के साथ-साथ कृतित्व की सूची दी है। शशिप्रभा शास्त्रीजी को प्राप्त सम्मान पुरस्कार आदि का संक्षिप्त परिचय दिया है।

शशिप्रभा शास्त्री जी के जीवन परिचय के अंतर्गत उनका जन्म, शिक्षा, दीक्षा, माता-पिता, परिवार आदि का विवेचन दिया है। यह केवल संकेत रूप में है।

कृतित्व के अंतर्गत :-

उपन्यास, कहानी, यात्रा, साहित्य, बाल साहित्य की सूची दी है।

द्वितीय अध्याय : -

'शशिप्रभा शास्त्री' के उपन्यासों का संक्षिप्त परिचय :- इसमें उपन्यासों की सूची देकर 'सीढ़ियाँ', 'परछाइयों के पीछे', 'उम्र एक गलियारे की', 'कर्करेखा' इन चार उपन्यासों का उपन्यास के तत्वों- कथावस्तु, पात्र एवं चरित्र-चित्रण, कथोपकथन, देशकाल तथा वातावरण, भाषा शैली, शीर्षक के आधार पर परिचयात्मक विवेचन दिया है।

तृतीय अध्याय : -

शशिप्रभा शास्त्री के उपन्यासों में पारिवारिक जीवन यह अध्याय दो भागों में विभाजित है। इसमे निम्नलिखित विषयों का विवेचन है -

(अ) पारिवारिक जीवन :-

अर्थ स्वरूप एवं विशेषताएँ - इस भाग में परिवार की परिभाषा, अर्थ, विभिन्न विद्वानो द्वारा दी हुई परिभाषाएँ और स्वरूप एवं परिवार के कार्य आदि का विवेचन है।

(ब) शशिप्रभा शास्त्री के उपन्यासों में पारिवारिक जीवन : -

इस भाग के अंतर्गत उपन्यासों मे चित्रित पारिवारिक जीवन में दाम्पत्य प्रेम, पारिवारिक जीवन में भाई स्नेह, पारिवारिक जीबन में आत्मीयता, पारिवारिक जीवन में पडोसी सम्बन्ध, समझौताभरा पारिवारिक जीवन, पारिवारिक जीवन और मुँहबोले रिश्ते, त्याग, समर्पण भरा पारिवारिक जीवन, गैर जिम्मेदार अभिभावक और पारिवारिक जीवन, पारिवारिक जीवन में पति द्वारा पीडित नारी का जीवन, पारिवारिक जीवन और संतान का भविष्य, पारिवारिक जीवन: सुरक्षा का आवरण, पारिवारिक जीवन और पूर्व प्रेमी, पारिवारिक जीवन में बदलते रिश्ते, पारिवारिक जीवन में नौकरी पेशा नारी की स्थिति आदि के आधारपर उपन्यासों मे चित्रित पारिवारिक जीवन का विवेचन किया है।

चतुर्थ अध्याय :-

दाम्पत्य जीवन :- प्रस्तुत अध्याय दो भागों में विभाजित है। प्रथम भाग सैद्धान्तिक विवेचन से संबंधित है। इसमें दाम्पत्य जीवन की परिभाषा, दाम्पत्य जीवन के प्रकार (पद्धतियाँ),दाम्पत्य जीवन के कार्य, विशेषताएँ आदि का विवेचन शब्दकोशों एवं विद्वानों के मतों के आधारपर दिया है। द्वितीय भाग में शशिप्रभा शास्त्री के उपन्यासों में चित्रित दाम्पत्य जीवन की विशेषताएँ जैसे सफल-असफल दाम्पत्य जीवन, असफल प्रेम-विवाह, विवश दाम्पत्य जीवन, अल्प अवैद्य संबंध, विकृत यौन संबंधो का अंकन किया है। दाम्पत्य जीवन विघटन और दाम्पत्येत्तर संबंधों के कारणों शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा अन्य का विस्तृत परिचय देते हुए आलोच्च उपन्यासों मे चित्रित उपयुक्त कारणों का विवेचन किया है।

पंचम अध्याय :-

शशिप्रभा शास्त्री के उपन्यासों में चित्रित पारिवारिक जीवन की समस्याएँ :- इसके अंतर्गत 'समस्या' शब्द के विभिन्न अर्थ एवं परिभाषा देकर उपन्यासों में चित्रित परिवारिक समस्या जैसे - दहेज समस्या, अर्थाभाव की समस्या, हीन और वासना के कारण उत्पन्न समस्या का विवेचन है तथा परिवार विघटन की समस्या के कारणों को दिया है जैसे - स्वार्थी या आत्मकेंद्री मनोवृत्ति, संशय, सौंदर्य की कमी, अन्य की उपस्थिति, व्यसनाधीनता, निर्धनता, स्त्री की आर्थिक स्वतंत्रता, मूल्यों में टकराव, यौन

भावना की अतृप्ति, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में असमानता, दोनों के आयु के अन्तर की समस्या, महत्वकांक्षा, आदि।

अंत मे उपसंहार दिया है। जिसमे पूर्व नियोजित अध्यायों के निष्कर्ष दर्ज हैं। अंत में आधार ग्रंथों एवं संदर्भ ग्रंथों की सूची दी है।

लघुशोध - प्रबंध की मौलिकता :-

डॉ. शशिप्रभा शास्त्री के साहित्य की विशेषताएँ नारी लेखिकाओं में स्थान, शिल्प पक्ष आदि पर शोधकार्य संपन्न हुआ है। लेकिन पारिवारिक जीवन के समग्र पहलुओं का विवेचन नहीं हुआ है। अत: मैने उनके उपन्यासों का अध्ययन इस दृष्टि से किया यही मेरे अध्ययन की उपलब्धि और मैलिकता है। इस मैलिकता के निम्नलिखित बिंदु हैं -

(1) शशिप्रभा शास्त्री के उपन्यासों की प्रमुख विशेषता साठोत्तरी जीवन चित्रण है। प्रस्तुत लघुशोध प्रबंध में इस तथ्य को प्रकाशित किया है।

(2) शशिप्रभा शास्त्री ने अपने उपन्यासों में पारिवारिक जीवन की प्राय: समस्त विशेषताएँ देने की सफल कोशिश की है। इस तथ्य पर प्रस्तुत लघुशोध प्रबंध में प्रकाश डाला है।

(3) दाम्पत्य जीवन की स्वतंत्र विशेषताएँ देकर दाम्पत्य जीवन की समस्याओं का विवेचन किया है।

(4) दाम्पत्य जीवन टूटन के कारणों को स्वतंत्र रूप से दिया है।

(5) पारिवारिक जीवन एवं दाम्पत्य जीवन की प्रमुख समस्याओं का उपन्यासों के आधार पर विवेचन प्रस्तुत किया है।

नई दिशाएँ :-

शशिप्रभा शास्त्रीजी के साहित्य पर स्वतंत्र रूप से निम्नलिखित विषयों पर अनुसंधान किया जा सकता है -

(1) शशिप्रभा शास्त्री के साहित्य में चित्रित पारिवारिक जीवन

(2) शशिप्रभा शास्त्री के उपन्यासों में चित्रित दाम्पत्य जीवन।

(3) शशिप्रभा शास्त्री के साहित्य में नारी विमर्श।

(4) साठोत्तरी उपन्यास और शशिप्रभा शास्त्री।

(5) शशिप्रभा शास्त्री के साहित्य का मनोवैज्ञानिक अध्ययन।

ऋणनिर्देश

प्रस्तुत लघुशोध प्रबंध को सफल बनाने में जिन विद्वानों का एवं स्नेहियों का प्रोत्साहन एवं सहयोग मिला उन सभी का आभार प्रकट करना मैं अपना कर्तव्य समझती हूँ।

यह लघु शोध प्रबंध श्रद्धेय आदरणीय गुरुवर्य डॉ. र. ग. देसाई, अध्यक्ष, हिंदी विभाग, श्रीमती मथुबाई गरवारे कन्या महाविद्यालय, सांगली के उदार एवं प्रतिभाशाली व्यक्तित्व के आत्मीय एवं प्रेरक निर्देशक का फल है। आपका मिला हुआ आत्मीय और मौलिक मार्गदर्शन अविस्मरणीय है। अत: आपके प्रति मैं बहुत ऋणी हूँ। आपके प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मेरा परम कर्तव्य है। आपके इस अनुग्रह से ऋणमुक्त होना मेरे लिए असंभव है।

साथ ही श्रद्धेय आदरणीय डॉ. पांडुरंग पाटीलजी, अध्यक्ष, हिंदी विभाग, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर आदरणीय श्रद्धेय गुरवर्य डॉ. अर्जुन चव्हाणजी की मै ऋणी हूँ। जिन्होंने मुझे समय-समय पर प्रेरणा देकर मार्गदर्शन कर इस कार्य को पूरा करने में मेरी मदद की है। माता-पिता का कर्तव्य होता है कि संतान को अच्छी - से - अच्छी तालिम देकर अपने पैरों पर खडा रहने के काबिल बनाएँ मेरे पिताजी जवाहरलाल शंकरराव देशमाने, माता सौ. स्मीता जवाहरलाल देशमाने ने अनेक समस्याओं का सामना करते हुए अपने कर्तव्य को पूरा करने का सफल प्रयास किया है। उनके कृपाशीर्वाद का फल है कि मैं अपने जीवन पथ पर सफलतापूर्वक बढ रही हूँ उनके बीना मेरे जीवन का कोई भी कार्य पूरा नही हुआ हैं। आज मैं जो कुछ भी हूँ उन्ही की बदौलत हूँ। अत: इनका आभार मानकर मैं इनके ऋण से मुक्त नही होना चाहती।

मै. भाग्यशाली हूँ की मेरी बहन स्नेहल देशमाने, भावना देशमाने, मयूरा देशमाने जैसी छोटी बनहे हैं जिन्होने हर समय अपनी कठिनायों की ओर ध्यान न देकर मेरी हर कठिनाइयों का सफलता पूर्वक समाधान किया है। मैं भाग्यशाली हूँ मेरी अनेक सहेलियों तथा मित्रों तथा शुभचिंतको ने मुझे समय-समय पर प्रेरणा देकर इस लघुशोध

प्रबंध को पूरा करने में मदद की। अत: इन सबका आभार प्रकट करना मैं अपना कर्तव्य समझती हूँ।

इस लघुशोध-प्रबंध को संपन्न करने में निम्नांकित ग्रंथालयों का बहुमूल्य योगदान रहा है -

1. बॅ. बाळासाहेब खर्डेकर ग्रंथालय, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर।
2. श्रीमती मथुबाई गरवारे कन्या महाविद्यालय, सांगली।

इन ग्रंथालयों के प्रमुख एवं संबंधित कर्मचारियों की मैं हृदयपूर्वक आभारी हूँ। जिनके ग्रंथ उपलब्ध होने से मुझे काफी सुविधा हुई। मैं उन कृतिकारों और विद्वानों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ। जिनकी सृजनात्मक और वैचारिक रचनाओं का उपयोग मैने इस शोध कार्य के लिए किया है।

इस लघुशोध-प्रबंध का टंकलेखन कोल्हापुर के श्रीकांत कॉम्प्युटर ॲण्ड झेरॉक्स सेंटर में उत्तम और बडी तत्परता से किया इसीलिए मैं उनके प्रति आभार प्रकट करती हूँ।

अत: में एक बार फिर मैं इन सभी को मन:पूर्वक धन्यवाद देती हूँ। उन ज्ञात, अज्ञात व्यक्तियों का जिनका प्रत्यय एवं अप्रत्यक्ष सहयोग मेरे लिए अमूल्य सिद्ध हुआ, मैं हृदय से उनका आभार प्रकट करती हूँ और इस लघुशोध-प्रबंध को विद्वानों के समक्ष परीक्षणार्थ अत्यंत विनम्रता से प्रस्तुत करती हूँ।

शोध -छात्रा

Deshmane.

(कु. स्वाती जवाहर देशमाने)

स्थान : कोल्हापुर।

तिथि : 30 दिसंबर 2003